- अनुमान - एक ज्ञान के बाद और उसके कारण उत्पन्न होने वाला दूसरा ज्ञान अनुमान है, जैसे - धूम से वह्नि का ज्ञान।
- गौतम मुनि ने अनुमान को 'तत्पूर्वकम् प्रत्यक्ष मूलक' कहा।

55 - अनुमान के तीन अवयव होते हैं - पक्ष, साध्य और हेतु।
- साध्य - जिस वस्तु को सिद्ध करना है उसे साध्य कहते हैं।
- हेतु - जिसके द्वारा सिद्ध करते हैं उसे हेतु कहते हैं।
- पक्ष - जिसमें सिद्ध करना है उसे पक्ष कहते।
- अनुमान का आधार व्याप्ति है। दो वस्तुओं के बीच आवश्यक और सामान्य सम्बन्ध को व्याप्ति कहा जाता जैसे - जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-2 आग है यह व्याप्ति वाक्य
- व्याप्ति को अविनाभावनियम या नियतसाहचर्यनियम भी कहते
- अनुमान में पाँच वाक्य होते हैं - प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण उपनय और निगमन।
- अनुमान के दो रूप हैं - स्वार्थानुमान और परार्थानुमान
- गौतम मुनि ने न्यायसूत्र में तीन प्रकार के अनुमान का उल्लेख किया है - पूर्ववत्, शेषवत और सामान्यतोदृष्ट
- न्याय के मतानुसार व्याप्ति की स्थापना छः विधियों द्वारा पूरी होती है। ये हैं -

(1) अन्वय - एक वस्तु के भाव से दूसरी वस्तु भाव होना। जैसे - जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ-2 आग है।

(2) व्यतिरेक - एक वस्तु के अभाव से दूसरी वस्तु का अभाव है जैसे - जहाँ-जहाँ आग नहीं है वहाँ-वहाँ धुआँ भी नहीं है।

(3) व्यभिचाराग्रह - दो वस्तुओं के बीच व्यभिचार का अभाव व्यभिचाराग्रह कहा जाता है।

(4) उपाधिनिरास -

(5) तर्क - नैयायिक व्याप्ति की स्थापना अनुभव के साथ-2 तर्क के द्वारा भी करता है। तर्क के द्वारा उसकी पुष्टि करता है ताकि किसी संशयवादी के मन में सन्देह न रह सके।

(6) सामान्य लक्षण-प्रत्यक्ष - व्याप्ति में पूर्ण निश्चयात्मकता लाने के लिए नैयायिक सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष का सहारा लेते हैं। इसके द्वारा किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रत्यक्ष में उसकी जाति का भी प्रत्यक्ष हो जाता है। जैसे - मनुष्य के प्रत्यक्ष में ही उसकी जाति मनुष्यत्व का भी हमें प्रत्यक्ष ज्ञान हो जाता है।

डॉ प्रियंका कुमारी (सहायक प्रोफेसर)
महाराजा कॉलेज, आरा।

- हेत्वाभास - सामान्यतः हेत्वाभास का अर्थ हेतु का आभास है।
अनुमान हेतु [illegible]
तो अनुमान दूषित हो जायेगा। अतः अनुमान के दोष को हेत्वाभास कहा जाता है।

- न्याय-तर्कशास्त्र में पाँच प्रकार के हेत्वाभास माने गये हैं :-

(1) सव्यभिचार - इसे अनैकान्तिक भी कहते हैं। यह नियविध है अनुमान को सही होने के लिए आवश्यक है कि हेतु का साध्य के साथ ऐकान्तिक सम्बन्ध हो। सव्यभिचार का दोष तब उत्पन्न होता है जब हेतु का सम्बन्ध कभी साध्य से रहता हो और कभी साध्य से भिन्न किसी अन्य वस्तु से रहता हो। इसके तीन भेद -
(A) साधारण (B) असाधारण (C) अनुपसंहारी

(2) विरुद्ध - जब हेतु साध्य को सिद्ध नहीं करके उसके विरोधी को ही सिद्ध कर देता है तब विरुद्ध हेत्वाभास उदय होता है। जैसे :- हवा भारी है, क्योंकि वह खाली है।

(3) सत्प्रतिपक्ष :- जिस हेतु के साध्य का अभाव दूसरे हेतु द्वारा सिद्ध किया जा सके उसे सत्प्रतिपक्ष कहते हैं। जैसे, शब्द श्रव्य होने के कारण नित्य है, किन्तु यहाँ शब्द की अनित्यता सिद्ध करने के लिये दूसरा हेतु भी इस प्रकार है, शब्द कार्य होने के कारण अनित्य है।

(4) असिद्ध - जब हेतु की पक्ष में विद्यमानता न हो तो वह हेतु असिद्ध है। दूसरे शब्दों में हेतु का प्रयोग साध्य को सिद्ध करने के लिये होता है। परन्तु अगर ऐसा साध्य हो कि हेतु स्वयं असिद्ध हो तो उस हेत्वाभास को असिद्ध कहा जाता है। जैसे - छाया द्रव्य है, क्योंकि यह गतिशील है।
(B) असिद्ध तीन प्रकार का होता है -
(A) आश्रयासिद्ध (B) स्वरूपासिद्ध (C) व्याप्यत्वासिद्ध

(5) बाधित - जब हेतु के द्वारा सिद्ध साध्य को दूसरे प्रमाण से निश्चित रूप में खंडन हो जाय तो उसे बाधित हेत्वाभास कहा जाता है। बाधित का शाब्दिक अर्थ है 'खंडन'
जैसे - आग ठण्डी है, क्योंकि यह द्रव्य है।
यहाँ द्रव्य के आधार पर आग का ठण्डा होना प्रमाणित किया जाता है, स्पर्श ज्ञान के द्वारा यह खंडन हो जाता है।